सफलता की कहानी

झारखण्ड सरकार

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन प्रसार-सह-प्रशिक्षण संस्थान (समेति), झारखण्ड

द्वितीय तल्ला, कृषि भवन, काँके रोड, राँची, झारखण्ड

Web. : www.sameti.org, E-mail : sametijharkhand@rediffmail.com

ILL TRAINING OF RURAL YOUTH (STRY)
ORCHARD MANAGEMENT AND MAINTENANCE
5th to 11th September 2018
Organized by - ATMA Godda

रणधीर कुमार सिंह
मंत्री
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
झारखण्ड सरकार

झारखण्ड सरकार

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि समेति झारखण्ड द्वारा किसानों की सफलता की कहानी का प्रकाशन किया जा रहा है।

हर व्यक्ति सफल होना चाहता है और हर कोई एक रोल मॉडल ढूंढता है जो उसे सफलता की राह दिखा सके। यह सफलता अगर आस-पास के किसानों द्वारा ही हासिल की गई हो तो वह सफलता एक प्रेरणा स्रोत का कार्य करती है।

आशा है कि यह छोटी-सी पुस्तिका राज्य के किसानों को सफलता का संदेश देने में सफल होगी एवं किसान भाई-बहन इससे प्रेरणा प्राप्त कर कृषि के क्षेत्र में एवं अपने निजी जीवन में सफलता के नए कीर्त्तिमान स्थापित करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(रणधीर कुमार सिंह)

पूजा सिंघल, भा०प्र०से०
सचिव,
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग, झारखण्ड

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि समेति द्वारा राज्य के कृषक बंधुओं की सफलता की कहानी प्रकाशित की जा रही है।

आशा है कि यह पुस्तिका राज्य के किसान भाई-बहनो के लिए प्रेरणा स्रोत का काम करेगी एवं सफलता के इन उदाहरणों का अनुकरण कर किसान बन्धु मात्र कृषि के क्षेत्र में ही नहीं वरन अपने जीवन में भी सफलता के नये कीर्त्तिमान स्थापित करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(पूजा सिंघल)

रमेश घोलप, भा०प्र०से०
कृषि निदेशक, झारखण्ड सरकार

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि समेति, झारखण्ड द्वारा किसानों की सफलता की कहानी का प्रकाशन किया जा रहा है।

कृषक भाई-बहनों की सफलता का प्रभाव उनके आस-पड़ोस के किसानों तक सीमित रहता है, परन्तु यदि इन सफलताओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए तो यह राज्य के सुदूर क्षेत्रों के कृषकों के लिए भी प्रेरणा-स्रोत बन सकता है।

मुझे आशा है कि इस पुस्तिका के प्रकाशन से झारखण्ड राज्य के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के किसान भी इन सफलताओं को पढ़कर एवं उनका अनुकरण कर उन सफलताओं को दोहरा सकेंगे एवं स्वयं भी सफलता के उदाहरण बनेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(रमेश घोलप)

डॉ० एम०एस०ए० महालिंगा शिवा
निदेशक समेति, झारखण्ड

संदेश

झारखण्ड राज्य में आत्मा मॉडल गत लगभग 18 वर्षों से सफलता पूर्वक कार्यरत है।

आत्मा मॉडल की सफलता का राज है इसका विकेन्द्रित अधोउर्ध्व योजना पद्धति (Bottom up planning), समावेशी योजना सूत्रन एवं गाँव स्तर से जिला स्तर पर इनका प्रबोधन।

विगत वर्षों में आत्मा से जुड़े किसानों की छोटी-बड़ी सफलताओं का आख्यान समेति द्वारा लगातार प्रकाशित किया जाता रहा है। इस कड़ी में सफलता की कहानी शीर्षक से लघु पुस्तिका का प्रकाशन मेरे लिए अत्यन्त ही हर्ष का विषय है।

इन छोटी-छोटी सफलताओं का सकारात्मक प्रभाव क्षेत्र के अन्य किसानों पर भी पड़ता है। आशा है कि इस छोटी-सी पुस्तिका को पढ़कर क्षेत्र के अन्य किसान इन सफलताओं का अनुकरण करेंगे व स्वयं भी सफलता का एक उदाहरण बनेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ० एम०एस०ए० महालिंगा शिवा)

अनुक्रमणिका

विवरणी	पृष्ठ सं.
रेंडों गाँव का रोल माडल बना सुखदेव	2
'आत्मा' से जुड़ाव जीवन में बदलाव – सुमति देवी	3
प्रचार प्रसार से लिया लाभ – दिनेश मेहता	4
एस.आर.आई. बेहतर तकनीक, ज्यादा मुनाफा – राम प्रसाद कुशवाहा	5
मेहनत और अनुभव की मिसाल – बिरेन्द्र प्रसाद	6
बंजर भूमि में कर दिखाया पैदावार – राजेन्द्र सिंह	7
खेती देखकर एवं करके सीखा – पुष्पा सिंकु	8
नई तकनीक की कहानी – हाड़ो बुड़ीउली	9
भरोसा, नई तकनीक का – तेतरी देवी	11
घरेलू महिला से बनी प्रगतिशील महिला कृषक – सुखमारी देवी	12
खेत में हरियाली आयी – जितनी देवी	13
वर्मी कम्पोस्ट में एक ही नाम – अनिता देवी	14
छोटी सी पहल – कृष्णा सिंह	15
खेती से बदल ली अपनी जिन्दगी – रिंकू साव	16
कृषक पाठशाला में सीखी तकनीक – उत्तरा महतो	17
नई तकनीक की कहानी – छाया महतो	18
एस०एम०ए०ई०/ आत्मा योजना के मुख्य घटक/गतिविधियाँ	20

रेंडों गाँव का रोल माडल बना सुखदेव

सुखदेव उरांव
ग्राम–रेंडो, प्रखण्ड–कांके, डाकघर – बोरिया, जिला–रांची

यह कहानी है रांची जिले से संबद्ध कांके प्रखंड के रेंडो गांव निवासी सुखदेव उरांव की। जिला मुख्यालय से लगभग 22 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित इस गांव में रहने वाले सुखदेव ने इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई की है। बारिश के मौसम में धान की खेती और बाकि दिनों में शहरों में मजदूरी आर्थिक रूप से कमजोर सुखदेव की नियति थी। इस बीच वे आत्मा, रांची के संपर्क में आए और फिर संकल्पित होकर खेती–बारी में जुट गये। जल्द ही उन्हें इसका अंदाजा हो गया कि मजदूरी से कहीं अधिक लाभकारी धंधा वैज्ञानिक पद्धति से खेती करना है। सुखदेव लगातार आत्मा, रांची और बीटीएम, कांके के संपर्क में रहे। आत्मा के ही सौजन्य से उन्होंने बीएयू रांची, हार्प प्लांडू आदि संस्थानों का परिभ्रमण किया और खेती के नए गुर सीखे। उन्होंने एक ओर जहां खेती की नई तकनीकों को आत्मसात किया, वहीं हाइब्रिड सब्जियों की भी खेती की। एसआरआई पद्धति से धान व एसडब्ल्यूआई विधि से गेहूं की फसल लगाई। कभी सिर्फ धान की खेती पर आश्रित रहने वाले सुखदेव के खेत में आज टमाटर, बैगन, मिर्च, बंद गोभी, फूलगोभी, बीन्स, खीरा, कद्दू आदि सब्जियों की कई प्रभेद लहलहा रही है।

जमीन	:	छह एकड़
सिंचित भूमि	:	02 एकड़
असिंचित भूमि	:	04 एकड़
मोबाइल नंबर	:	8002837330
सदस्य, एसएचजी/ प्रोड्यूसर को–आपरेटिव/ कंपनी/ को–आपरेटिव सोसाइटी	:	सदस्य, फार्मर इंट्रेस्ट ग्रुप, रेंडो
सेंट्रल सेक्टर का नाम/राज्य संपोषित योजना, जिसका लाभ लिया	:	एक्सटेंशन रिफार्म, रांची, जिला कृषि रांची, एनएफएमएम

अपनी इस सफलता से खुश सुखदेव बहरहाल सफलता के कई नए आयाम गढ़ने को प्रयासरत है। उसने हाल ही में जहां सब्जी उत्पादन को और भी विस्तार देने के लिए ड्रिप इरिगेशन का आवेदन दिया है, वहीं नेट हाउस की भी डिमांड की है। इतना ही नहीं उसने आत्मा के सौजन्य से 14 वर्मी कंपोस्ट की इकाइयां स्थापित की है, जिसके सहारे उसकी जमीन तो समृद्ध हो ही रही है, गांव के अन्य किसानों को भी रियायती दर पर वर्मी कंपोस्ट की उपलब्धता सुनिश्चित हो पा रही है। सुखदेव आज फार्म स्कूल का संचालन भी कर रहें हैं। गांव के अन्य किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बने सुखदेव ने किसानों का एक समूह तैयार किया है, जिसके साथ समुन्नत खेती पर उनका संवाद जारी है। सुखदेव की इस लगन की सरकार भी कायल है। 2011 में जहां उसे प्रखंड स्तर पर सम्मान मिला, वहीं 2013 में विश्व आदिवासी दिवस के मौके पर राज्य सरकार ने उन्हें पुरस्कृत किया। सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए किसान मेला, विकास मेला जैसे अवसरों पर कई बार पुरस्कृत हो चुके सुखदेव अपने मिशन पर तेजी से अग्रसर हैं। सुखदेव आज अपने गांव के किसानों के लिए रोल माडल बन गये हैं।

		पूर्व में	वर्तमान में
फसल/कार्य	:	मजदूरी, धान की खेती	सब्जी एवं एसआरआई विधि से धाान उत्पादन, वर्मी कंपोस्ट आदि
उत्पादन	:	प्रति हेक्टेयर 39 क्विंटल	प्रति हेक्टेयर 53 क्विंटल
विक्रय मूल्य	:	लगभग 50000 रू०	लगभग 400000 रू०
उत्पादन खर्च	:	लगभग 20000 रू०	लगभग 70000 रू०
मजदूरी	:	लगभग 10000 रू०	लगभग 50000 रू०
शुद्ध आय	:	लगभग 20000 रू०	लगभग 380000 रू०

'आत्मा' से जुड़ाव जीवन में बदलाव - सुमति देवी

सुमति देवी
समुह : दुर्गा महिला मंडल, ग्राम-सरलाकलां, जिला-रामगढ़

विगत कई वर्षों से परम्परागत तरीके से खेती कर रहीं हूँ, परन्तु मुझे कभी भी अच्छी फसल और अच्छा मुनाफा नहीं मिल पा रहा था। सभी फसलों में बीज की अधिक मात्रा का इस्तेमाल, बीज का उपचार नहीं करना, फसल में रासायनिक उर्वरकों की अनुचित मात्रा में प्रयोग, भूमि की भौतिक दशा का खराब होना, पौधों की सही दूरी एवं कतार से कतार की सही दूरी का ज्ञान नहीं होना, जिसके कारण मेरे लिए कृषि कार्य खर्चीला एवं असुविधाजनक हो गया था। मेरे लिए जीविकोपार्जन का एक मात्र साधन कृषि ही था। लेकिन मैं अपना एवं परिवार का भरण पोषण और बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था करने में सक्षम नहीं थी। फलतः मैं कृषि कार्य छोड़ने और कुछ अलग करने के लिए सोचने लगी।

आत्मा योजना अन्तर्गत किसान मेले में जाने का मौका मिला, वहाँ परियोजना निदेशक आत्मा के द्वारा एक्सटेंशन रिफोर्म्स योजना के अन्तर्गत समूह की क्षमता विकास कार्यक्रम के बारे में बताया जा रहा था। मैंने अपने प्रखण्ड के तकनीकी प्रबंधक रजनीश आनंद एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक अफताब अहमद से सम्पर्क किया एवं समूह का गठन किया प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिक श्री एस.एन. के चौधरी के द्वारा मेरे समूह को मिश्रित कृषि एवं सब्जी उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। प्रथम बार उन्होंने ही खेती के वैज्ञानिक पहलुओं को हमारे समूह के किसानों को बताया। उन्होंने आने वाली पीढ़ी को प्रदूषण मुक्त और शुद्ध वातावरण मिल सके इसके लिए टिकाव खेती के महत्त्व को समझाया साथ ही मिट्टी की उर्वरता कायम रहे इसके लिए हरी खाद एवं जैविक खाद की खेती में अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया। मिश्रित कृषि के महत्त्व को समझाया और यह भी प्रशिक्षण दिया कि हम एक साथ ही फार्म पर कृषि, बागवानी, पशुपालन एवं मछली पालन कैसे कर सकते हैं; साथ ही, वैज्ञानिक कृषि एवं पारंपरिक कृषि के अन्तर को सटीक तरीके से समझाया। उन्हीं के मार्गदर्शन में हमने एक साथ कृषि, बागवानी, पशुपालन एवं मछली पालन शुरू किया एवं बैंक से किसान क्रेडिट कार्ड ऋण प्राप्त किया। प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के सहयोग से भूमि संरक्षण विभाग से प्राप्त सोलर पम्प सेट लगाया। आज हम ऐसी सब्जी भी उगा रहे हैं जो हमारे जिले में बहुत कम या नहीं के बराबर उगाया जाता है जैसे- ब्रोकली, बीट, शिमला मिर्च आदि। हम बाजार के मांग के अनुसार सब्जी उत्पादन कर रहे हैं, साथ में, बत्तख पालन और मछली पालन कर रहे हैं। साथ ही बीचड़ा उत्पादन कर अपने गाँव में बेच रहे हैं। उपरोक्त कार्यों में मेरे पति भी हमारा साथ दे रहे हैं और इससे हमारी अच्छी आमदनी हो रही है।

मैं और मेरा समूह आत्मा परिवार के शुक्रगुजार हैं और इसके लिए मैं आत्मा परिवार को धन्यवाद देती हूँ कि जिसके सहयोग से आज हम इस मुकाम पर पहुँचे हैं। आज भी परियोजना निदेशक आत्मा प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, सहायक तकनीकी प्रबंधक हमारे फार्म पर समय-समय पर आते रहते हैं एवं आवश्यकतानुसार सुझाव देते रहते हैं। मैं अन्य कृषकों को कहना चाहूँगी कि कृषि की वैज्ञानिक तरीके एवं मिश्रित कृषि को अपना कर अधिक से अधिक लाभ कमा सकते हैं एवं अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं।

■■■

प्रचार प्रसार से लिया लाभ - दिनेश मेहता

दिनेश मेहता
विश्रामपुर, पलामू,
झारखण्ड

मेरा नाम दिनेश मेहता है, मैं ग्राम गोदरमा थाना रेहला, विश्रामपुर प्रखण्ड जिला पलामू का निवासी हूँ। मेरा पढ़ाई लिखाई 10वीं तक हुई है। दसवीं पास करने के बाद मैं अपने पिताजी के साथ अपने पुश्तैनी कार्य खेती-बारी में लग गया। मेरे अलावा मेरे माता पिता तथा तीन बच्चे हैं।

पिताजी पुराने तरीके से खेती करते थे। मैं बहुत चिन्ता करता था कि खेती से कैसे अधिक आमदनी होगी। घर के पालन-पोषण के साथ बच्चों की शिक्षा भी बड़ी जिम्मेदारी थी। अच्छी तकनीकी जानकारी का अभाव मुझे बहुत खलने लगा था। मुझे एफ.एम. रेडियो के जरिए आत्मा के बारे में जानकारी हुई जो कृषि सम्बन्धी कार्यों में सहयोग करती है। मैं आत्मा के कार्यालय में गया और कुछ जानकारी प्राप्त की आत्मा के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर मैंने मौसमी फसलों की खेती करनी शुरू की।

गेहूँ तथा दलहनी फसलों के अलावा मैं नींबू, केला, पपीता, ओल आदि की खेती एक साथ करता हूँ। मवेशियों से सब्जियाँ बचाने के लिए मैंने बांस का बाड़ लगाया है। जिसमें करैला, लौकी, सेम आदि लतर वाली सब्जियाँ लगा दिया हूँ, जिससे मुझे काफी अच्छी फसल हासिल होती है तथा मैं लगभग 30 हजार रू० की सब्जियों बेच दिया करता हूँ। मैं आत्मा, के.वी.के., जिला कृषि कार्याल्य के द्वारा लगाये गये प्रशिक्षण शिविर में जाता हूँ और प्रशिक्षण प्राप्त कर इस तकनीक से खेती करता हूँ। मैंने राज्य में आयोजित सभी किसान मेला में 25 से 30 पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र अपने उत्कृष्ट उत्पाद के लिए पाया है।

वर्तमान में साल में 3 से 4 लाख रू. की कमाई खेती के माध्यम से कर रहा हूँ। मेरा परिवार खुशहाल है। किसान भाईयों को मैं अपने यहाँ आमंत्रित करता हूँ कि वे आयें और मेरे बागवानी एवं खेत देखकर खेती करें एवं अच्छी आमदनी प्राप्त करें।

■■■

एस.आर.आई. बहेतर तकनीक, ज्यादा मुनाफा

- राम प्रसाद कुशवाहा

राम प्रसाद कुशवाहा
ग्राम-अमनारी, हजारीबाग

मैं राम प्रसाद कुशवाहा, पिता-स्व. अमीर चन्द महतो, ग्राम-अमनारी, पंचायत-अमनारी, प्रखण्ड-सदर, जिला-हजारीबाग, झारखण्ड का निवासी हूँ। एक दिन मैं प्रखण्ड कार्यालय सदर गया तो वहां पर कार्यरत प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक द्वारा एस.आर.आई. प्रदर्शन एवं उसमें मिलने वाली सहायता उसकी तकनीक के बारे में बताया गया। कुछ अनमने मन से इस तकनीक से रोपाई के लिए तैयार हो गया।

मो. नं॰	9955183282	
अंगीकृत श्रेष्ठ अभ्यास/अभिनव	धान की श्री विधि से खेती	
लाभ का संदर्भ	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/स्कीम के अंगीकरण के बाद
पैदावार में बढ़ोत्तरी	17 क्विं/एकड़	30 क्विं/एकड़
आय में बढ़ोत्तरी	20,400 रुपया	36,000 रुपया
मजदूरी में बचाव	15 मजदूर	5 मजदूर
कटाई के लागत में कमी	2,250 रुपया	1500 रुपया की बचत

सर्व प्रथम बेड बनाकर 50 टोकरी खाद डाल कर 'आत्मा' से प्राप्त धान बीज प्रजाति K.R.H-2 की नर्सरी डाली। ठीक ग्यारहवें दिन जब रस्सी लगा कर 25×25 से. मी. पर एक-एक बिचड़ा की रोपाई कर रहा था तो उधर से गुजरते हुए हमारे पड़ोसी किसान मजाक उड़ाने लगे। उसी रात बड़ी तेजी से बारिश हुई, पूरा खेत पौधा सहित पानी में डूब गया। मैं काफी निराश हो गया क्योंकि मेरे पास यही एक ही खेत धान के लिए था।

दूसरे दिन मैं प्रखण्ड कार्यालय गया। वहाँ प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक ने मुझे खेती का पानी निकालने का सुझाव दिया। मैंने खेत से पानी निकाल दिया पौधा हल्की-हल्की दूर-दूर दिखने लगा। मैने कोनोवीडर, रोपाई के एक सप्ताह बाद खेत में चलाया। पौधा के कल्ले की संख्या में बढ़ोत्तरी होने लगी। एक सप्ताह बाद पुनः कोनोवीडर चलाया। परिवार में भी आस जगी। यूरिया को दो बार टॉप ड्रेसिंग की गई, इस प्रकार एक-एक पौधा से 55 से 60 कल्ले निकले एवं मेरी फसल पड़ोसियों को अच्छी लगने लगी और मेरी प्रशंसा हुई। मेरा मनोबल बढ़ता गया। मैंने फसल कटनी करवाई जिसमें उपज 76 क्विंटल प्रति हे. निकली। मैं यह बम्पर पैदावार प्राप्त करके बहुत खुश हूँ। कम पानी, कम बीज, कम लागत से अधिक से अधिक पैदावार प्राप्त हुई। इसके बाद मैंने निश्चय किया कि प्रति वर्ष इसी तरह धान की रोपाई करेंगे और अधिक से अधिक लाभ कमायेंगे। मैं अपने गाँव व पंचायत, रिश्तेदारों एवं किसानों को भी यह तकनीक बताया हूँ।

इसके साथ मुर्गी (कुक्कुट) फार्म 1500 चूजों के बीच चलाता हूँ और उसके साथ 50 बकरी भी पाल रहा हूँ। सब्जी का खेती-मूली, गाजर, बीट, पत्तागोभी, फूलगोभी एवं टमाटर की खेती श्री विधि के अनुसार करता हूँ एवं वर्मी कम्पोष्ट खाद का बेड बनाकर तैयार करता हूँ और तैयार खाद को अपने खेत में डालकर रासायनिक खाद की मात्रा का प्रयोग कम करता हूँ और किसानों को भी प्रेरित करता हूँ। सभी से ये अपील करता हूँ कि कम से कम एक बार धान की खेती श्रीविधि से करके देखें ताकि कम लागत में ज्यादा मुनाफा प्राप्त हो सके।

■■■

मेहनत और अनुभव की मिसाल - बीरेन्द्र प्रसाद

बीरेन्द्र प्रसाद
ग्राम-लरसर,
प्रखंड-हंटरगंज, चतरा

मैं बिरेन्द्र प्रसाद सिंह, पिता स्व. गोखुल सिंह चतरा जिला के हंटरगंज प्रखण्ड अन्तर्गत एक प्रगतिशील कृषक हूँ। मेरा प्रखण्ड जिला मुख्यालय से 35 कि.मी. पश्चिम में अवस्थित है हंटरगंज प्रखण्ड इस जिले का सबसे बड़ा प्रखण्ड है। इसमें भौगोलिक विविधता भी है। इसी प्रखण्ड में माँ कौलेश्वरी नामक स्थान एक धार्मिक स्थल भी है। हंटरगंज प्रखण्ड अन्तर्गत कुल अठ्ठाईस (28) पंचायत है। इसी एक पंचायत उरैली का निवासी हूँ। उरैली पंचायत की एक विशेषता यह है कि इसके एक ओर नीलांजल नदी बहती है जिससे इस पंचायत की भूमि समतल एवं उपजाउ है। प्राकृतिक संपदा से भरपूर अच्छी उपज वाली यहाँ की मिट्टी है। उरैली पंचायत के अन्तर्गत लरसर एक गाँव है। जिसमें सामान्य जाति के ज्यादा किसान निवास करते हैं। मेरे पास कुल जमीन 3 एकड़ है। मेरे द्वारा धान, गेहूँ, चना मुख्य रूप में उपजाया जाता है। कुछ वर्ष पूर्व मैं कृषि में लगायी गयी पूँजी वापस आ जाए यही सोचता था। कभी-कभी लगता था, कृषि छोड़कर शहर में काम करूँ। जमीन रहने के बाद भी ना पैदावार हो पा रहा था न ही आमदनी हो रही थी। फिर मैं 'आत्मा' के संपर्क में आया। जबसे मैं 'आत्मा' के संपर्क में आया तब से मेरे खेती करने की शैली ही बदल गई। आत्मा के द्वारा मैंने समय-समय पर आयोजित जिला एवं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल होकर नये-नये तकनीक की जानकारी प्राप्त की। इससे प्राप्त लाभ को मैं अपने क्षेत्र के कृषकों को भी बताता रहता हूँ। जिससे मेरे प्रखण्ड के अन्य कृषक भी लाभान्वित हो रहे हैं। आत्मा के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक मेरे द्वारा किये जा रहे कृषि कार्यों का लगातार अनुश्रवण कर मेरे मनोबल को दृढ़ करते हैं।

धारित कुल भूमि	3 एकड़	
सिंचित भूमि	2 एकड़	
असिंचित भूमि	1 एकड़	
मोबाईल संख्या	7739740752	
सदस्य	कृषक समिति	बकरी एवं मूर्गी
	पूर्व में	वर्तमान में
कृषि तकनीकी	पारंपरिक	श्री विधि
उपज	धान 20.8 क्विं/हे०	धान 65.6 क्विं/हे०
बिक्री मूल्य	22,000/-	75,000/-
उत्पादन लागत	9000/-	8600/-
मजदूरी लागत	1500/-	2200/-
कुल लाभ	12,500/-	55,000/-

वर्तमान में मैंने श्री विधि से संकर धान का प्रत्यक्षण कराया जिसका भरपूर लाभ प्राप्त हुआ। इसके साथ राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत मूंग का प्रत्यक्षण कराया हूँ। इसका प्रत्यक्षण आत्मा द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के आलोक में किया हूँ। इसमें सूक्ष्म पोषण तत्व (बोरेक्स) एवं डोलोमाईट का उपयोग मेरे लिये एक नया प्रयोग था। जिसका फल किसानों को इस प्रत्यक्षण से देखने को मिला। श्री विधि तकनीक को अपनाना मेरे लिये शुरूआत में संदेहजनक था। प्रशिक्षण के माध्यमों से ही मैने धान का उत्पादन 65.6 क्विं. प्रति हे. किया। आज मेरी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है। आमदनी के साथ-साथ अच्छी तकनीक भी मेरे पास है। इसके लिये मैं जिला कृषि पदाधिकारी/परियोजना निदेशक, आत्मा चतरा के साथ-साथ प्रखण्ड तकनीकी प्रबेधक एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को धन्यवाद देता हूँ।

■■■

बंजर भूमि में कर दिखाया पैदावार - राजेन्द्र सिंह

राजेन्द्र सिंह
पिता-भुगल सिंह
ग्राम : दुन्दू, पंचायत : दुन्दू, पोस्ट : मटलौंग
प्रखण्ड : मनिका, जिला-लातेहार।

मेरा जन्म एक गरीब आदिवासी कृषक परिवार में हुआ है। मैं **राजेन्द्र सिंह,** पिता **श्री भुगल सिंह**, ग्राम-दुन्दू, पंचायत-दुन्दू, प्रखण्ड-मनिका, जिला-लातेहार, राज्य-झारखण्ड का निवासी हूँ मैं पाँचवीं पास तक ही शिक्षा ग्रहण किया हूँ। मेरे परिवार में कुल 19 सदस्य हैं। मेरे परिवार में कोई भी सदस्य सरकारी नौकरी नहीं करते हैं। घर के सभी सदस्यों का रहन-सहन पूर्व में काफी दयनीय था। काम की खोज में पलायन करना पड़ता था। मैं एक दिन आत्मा लातेहार से संपर्क किया। संपर्क करने के पश्चात् मुझे कृषि से संबंधित जानकारी प्राप्त हुई एवं मुझे आधुनिक तरीके से खेती करने हेतु सहयोग प्रदान किया गया। मेरे पास कुल 20.00 एकड़ भूमि है। मुझे यह ज्ञात हुआ कि मेरी बंजर भूमि में बागवानी, सब्जी की खेती, मुर्गीपालन, मत्स्यपालन आदि किया जा सकता है। इससे प्रेरित होकर मैंने मनरेगा के तहत सिंचाई हेतु एक कुँआ के निर्माण का कार्य लिया।

धारित कुल भूमि	:	20.00 एकड़
मुख्य कृषि कार्य	:	कृषि कार्य के साथ-साथ सब्जी उत्पादन एवं बागवानी कार्य।
कृषि/संबंद्ध में कार्य करने का अनुभव	:	15 से 20 वर्ष।
प्रशिक्षण	:	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का अनुसंधान, अनुसंधान केन्द्र, पलाण्डु, राँची।
संस्थान की सदस्यता	:	आत्मा, लातेहार
आम के पौधे की संख्या	:	800
कुल कृषि योग्य भूमि	:	7.00 एकड़
आम के बगीचे का क्षेत्रफल	:	6.00 एकड़
फसल की स्थिति	:	अच्छा

उसके बाद बंजर भूमि में मनरेगा के तहत बागवानी हेतु कुल 800 आम का वृक्षारोपण किया। मनरेगा एवं आत्मा के अभिसरण के तहत आम के बगीचे में सिंचाई प्रणाली लगाया। सूक्ष्म सिंचाई वैसी प्रणाली है जिससे पौधों को आवश्यकता अनुसार ही पानी दिया जाता है। पौधों की स्थिति बहुत ही अच्छी है। आम के बगीचे में ही पौधों के बीच में सब्जी जैसे-मिर्चा, लौकी, कोहड़ा, अरहर, सेम आदि की खेती की गयी है। इसलिए अब मेरे घर के सभी सदस्य कृषि के साथ-साथ बागवानी एवं आम के बगीचे में हरी सब्जी आदि की खेती करने में पूरी रूचि लेने लगे। घर के सदस्यों का पलायन अब नहीं हो रहा है एवं सभी मन लगाकर खेती कर रहे हैं।।

कृषि में मेरी सफलता को देखकर जिले के अन्य किसान अपनी बंजर भूमि को खेती योग्य बनाकर उसमें बागवानी एवं सब्जी की खेती करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं, जिससे जिले के मजदूरों एवं किसानों के पलायन में कमी हुई है एवं उनकी आर्थिक एवं समाजिक स्थिति में सुधार हुआ है।

■■■

खेती देखकर एवं करके सीखा - पुष्पा सिंकु

श्रीमति पुष्पा सिंकू
पति-हरिश चन्द्र सिंकू,
ग्राम-महतीसई, झारखण्ड

जहाँ चाह, वहाँ राह मुहावरे को यथार्थ करने वाली महत्वाकांक्षी श्रीमती पुष्पा सिंकू, पति - हरिश चन्द्र सिंकू, ग्राम-महतीसाई, प्रखण्ड- हाटगम्हरिया, जिला- पश्चिमी सिंहभूम, झारखण्ड में खेती एवं कृषि से सम्बद्ध क्षेत्र में कार्य कर रहीं हैं।

कुल धारित भूमि	2.5 हे०
सिंचित भूमि	0.4 हे०
असिंचित भूमि	1.7 हे०
मोबाईल न.)	9199749519
सदस्य	होरा मार्शल सोसाइटी (स्वयं सहायता समूह हाट गम्हरिया लैप्स)
अभ्यास/अभिनव	श्री विधि धान
उपज	55.00 क्विं/हे०
बिक्री मूल्य	66000.00 रूपये
उपादान लागत	6000.00 रूपये
मजदूरी लागत	6000.00 रूपये
अन्य लागत	1500.00 रूपये
कुल लाभ	56000.00 रूपये

श्रीमती सिंकू होरा मार्शल सोसायटी हाटगम्हरिया लैम्पस में सदस्य के रूप में भी कार्य कर रहीं हैं। श्रीमती सिंकू 2002 से आत्मा में जुड़कर अन्तर्राज्य एवं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण एवं वाह्यभ्रमण कर कृषि का कार्य कर रहीं है। प्रशिक्षण एवं भ्रमण के क्रम में उन्हें चावल अनुसंधान केन्द्र, कटक, आलू अनुसंधान केन्द्र, शिमला के अतिरिक्त अन्य कृषि संस्थानों में जाने का मौका मिला। जहाँ उन्हें उन्नत तकनीक द्वारा कृषि एवं सब्जी की खेती की जानकारी मिली, साथ ही अन्य उत्कृष्ट किसानों से मिलकर उन्हें अधिक प्रेरणा मिली। आत्मा से जुड़कर कृषि से सम्बद्ध विभागों द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की भी जानकारी प्राप्त हुई।

आत्मा से जुड़ने से पूर्व उनके द्वारा परम्परागत तरीके से खेती की जाती थी, जिससे जीवन यापन हो जाता था। खेती की नई-नई तकनीक सीखने के पश्चात उनका उत्पादन बढ़ा साथ ही कृषि से सम्बद्ध क्षेत्रों में भी उनके द्वारा कार्य किया गया जैसे - सब्जी की खेती, मशरूम उत्पादन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, दुधारूगाय पालन एवं मत्स्य पालन इत्यादि जिससे आमदनी में वृद्धि हुई।

धान की खेती के वर्षा ठीक से नहीं होने से रोपनी में कठिनाई होने के कारण श्रीमति सिंकू द्वारा अभिनव कृषि यंत्र बनाया गया। धान की सीधी बुवाई के लिए 8 पंक्तियों वाला Furrow Openor यंत्र का निर्माण किया, जिससे कम मेहनत एवं खेती के लागत को कम किया जा सके। 8 पंक्तियों वाला निर्मित Furrow Openor यंत्र का उपयोग अन्य किसानों द्वारा भी अपनाया गया। जिले में अधिकतर छींटाविधि से धान की खेती की जाती है, जिससे बीज दर, खरपतवार तथा मजदूरी के कारण खेती की लागत अधिक होती है। 8 पंक्तियों वाला निर्मित Furrow Opener यंत्र का उपयोग से खेती की लागत कम होती है, जिसके लिए श्रीमती सिंकू को हैदराबाद में पुरस्कार भी प्रदान किया गया। श्रीमती पुष्पा सिंकू को देख कर उनके आस-पास के ग्राम के किसान प्रेरणा लेते हुए इनकी इस पद्धति को अपनाया, जो एक मिसाल है।

■■■

नई तकनीक की कहानी - हाड़ो बुड़ीउली

हाड़ो बुड़ीउली
ग्राम–बरकुन्डिया,
चाईबासा

प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त मैंने पेशा के रूप में खेती को चुना। ग्राम से जुड़े रहने की स्थिति में आय स्रोत हेतु खेती से अच्छा कोई व्यवसाय नहीं। शुरुआत में पारम्परिक विधि से धान एवं सब्जी की उत्पादन करता रहा परन्तु आय में वृद्धि नहीं हो सकी। लगभग 20 वर्षों से इस पद्धति से खेती करता रहा परन्तु आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हो सका। इसी बीच में मैं बरकुन्डिया लेम्पस का सदस्य भी बन गया, जिससे मुझे खुद बीज प्राप्त करने के लिए शहर नहीं जाना पड़ता है। फिर मैं आत्मा से जुड़ा और मुझे खेती के संबंध में मार्ग दर्शन मिला। जिससे आत्मा के कार्यकलापों एवं योजनाओं की भी जानकारी प्राप्त होने लगी। वर्ष 2008 को ही राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही मुख्यमंत्री किसान खुशहाल योजना कार्यान्वित हुई। जिसमें संकुल के रूप में वर्ष 2008 को मेरे गांव बरकुन्डिया को चुना गया।

उक्त योजना के तहत कृषि से संबद्ध विभागों द्वारा भी हमारे गांव में प्राथमिकता के आधार पर समावेश हुआ। जिसे ग्राम के अधिकतर किसानों को कृषि एवं पशुपालन संबंधित प्रत्यक्षण एवं प्रशिक्षण दिया गया। मैं भी समेकित कृषि की ओर अग्रसारित हुआ और कृषि के साथ-साथ साग सब्जी, पशुपालन, मत्स्य एवं तसर पालन का कार्य शुरू किया जिससे मेरी आर्थिक स्थिति में कुछ-कुछ सुधार होने लगा।

आत्मा की ओर से श्रीविधि से धान की खेती पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण किसान भवन-सह-प्रशिक्षण केन्द्र, आत्मा चाईबासा में आयोजित की गई जिसमें मैं भी भाग लिया। परन्तु मुझे श्रीविधि से धान की खेती पर विश्वास नहीं हुआ।

इसके बाद मुझे बाह्य भ्रमण के रूप में केन्द्रीय चावल अनुसंधान केन्द्र, उड़ीसा भी भेजा गया जहाँ मैंने श्रीविधि के अतिरिक्त अन्य विधि यथा संकर तकनीक एवं अधिक उपजशील से की जा रही खेती को देखा। तब मैंने निश्चय किया कि मैं भी श्रीविधि पद्धति से ही धान की खेती करूँगा और मैंने एक हेक्टेयर में श्रीविधि से खेती की।

खेत की तैयारी कर बिचड़ा को तैयार किया, 5 किलोग्राम बीज से बीचड़ा तैयार करने पर ग्राम के अन्य कृषक द्वारा कहा गया कि इतने थोड़े बीज से क्या खेती होगी। तदोपरान्त रोपनी का भी समय आ गया। मार्कर चलाने के बाद 25-25 सेन्टीमीटर की दूरी पर 1-1 पौधा का रोपाई करवाई जिससे 5 किलोग्राम बीज से पूरा 2.39 एकड़ खेत भर गया। दूसरे दिन किसानों द्वारा कहा गया कि धान की खेती कर रहे हो या लत्ती वाली सब्जी की, इतनी दूरी तो सब्जी में रखी जाती है, इससे क्या उपज होगी। इसकी उपज से तो दो माह का चावल भी नहीं होगा। इस प्रकार की बातें सुन कर मैं भयभीत हो गया। एक बार मन किया कि

उसी खेत में और बीज लाकर सीधी बुवाई कर दूँ। परन्तु आत्मा के पदाधिकारी द्वारा आश्वासन देने पर मेरे मन से भय दूर हुआ। तीसरी बार कोनोवीडर चलाने के उपरान्त कल्लों की संख्या में वृद्धि को देखकर दंग रह गया।

पौधे बड़े होने पर पूरा खेत भर गया जिसे ग्राम के किसान देखकर आश्चर्य चकित हो गए। उन्होंने मेरे निश्चय एवं संकल्प की दाद दी। समय गुजरता गया फिर फसल कटनी के दिन आत्मा के प्रखण्ड स्तर के पदाधिकारी द्वारा फसल कटनी की गई जिसमें गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। ग्राम एवं अन्य पंचायत के किसान भी उपस्थित हुए। तीन प्रक्षेत्र के फसल की कटनी की गई। जिसमें एक मेरे प्रत्यक्षण प्लॉट एवं एक सामान्य विधि द्वारा अधिक उपजशील तथा एक पारंपरिक विधि द्वारा निजी बीज से क्रमशः 25 क्विंटल एवं 15 क्विंटल उत्पादन हुआ। प्रत्यक्षण प्लाट से प्राप्त उपज 54 क्विंटल था जो इन दोनों प्रक्षेत्रों से प्राप्त उपज से कही अधिक हुआ।

उपस्थित सभी किसानों ने अगली बार श्रीविधि से धान की खेती को अपनाने की बात कहीं। जिला के किसानों से आग्रह करता हूँ कि उक्त संबंध में प्रशिक्षण प्राप्त कर इस विधि को जरूर अपनाए और अपने जिले के खाद्य उत्पादन को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करे तब हमारा देश कृषि प्रधान देश कहलाएगा।

आज मैं अपने ग्राम ही नहीं पंचायत, प्रखण्ड एवं जिला के कृषकों का प्रेरणास्रोत बन गया हूँ और श्रीविधि से धान की खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किसानों को प्रेरित भी कर रहा हूँ। मेरी सफलता से अनेक किसानों ने भी श्रीविधि को अपना कर अपनी आय को बढ़ाने का निश्चय किया है।

■■■

भरोसा, नई तकनीक का - तेतरी देवी

तेतरी देवी
ग्राम-अमनारी,
पंचायत-अमनारी, प्रखण्ड-सदर, जिला-हजारीबाग

मैं तेतरी देवी, पति-स्व. राम प्रसाद कुशवाहा, ग्राम-अमनारी, पंचायत-अमनारी, प्रखण्ड-सदर, जिला-हजारीबाग, झारखण्ड की निवासी हूँ, जून के प्रथम सप्ताह में मैं जब सदर प्रखण्ड कार्यालय गई तो वहाँ पर कार्यरत प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक एस.आर.आई. प्रदर्शन एवं उससे मिलने वाली सहायता एवं उनकी तकनीक के बारें में बताया गया कुछ अनमने मन से इस तकनीक से रोपाई के लिए तैयार हो गई, सर्व प्रथम मेड़ बनाकर 50 टोकरी खाद (गोबर-जैविक खाद) डाल कर प्राप्त धान बीज प्रजाति K.R.H-2 की नर्सरी डाली ठीक ग्यारहवें दिन जब रस्सी लगा कर 25×25 से.मी. पर एक-एक धान की रोपाई कर रही थी तो उधर से गुजरते हुए हमारे पड़ोसी किसान दूर-दूर रोपाई देखकर बाग लगाने की बात कह कर हंसी कर रहे थे, किन्तु रोपाई वाली रात में ही बड़ी तेज बारिश हुई पूरा खेत पौधा सहित पानी में डूब गया मैं काफी निराश हुई, मेरे पास यह एक ही खेत धान के लिए था मेरे पति और पुत्र मुझसे लड़ने लगे, यहाँ तक की उस रात मैंने खाना भी नहीं खाया, दूसरे दिन प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक द्वारा ढाढस बंधाया गया, भरोसा दिया गया।

मोबाइल नम्बर	9955183282	
अंगीकृत श्रेष्ठ अभ्यास/ अभनव	धान का श्री विधि से खेती	
लाभ का संदर्भ	गतिविधि/ स्कीम के अंगीकरण के पूर्व	गतिविधि/ स्कीम के अंगीकरण के बाद
पैदावार में बढ़ोत्तरी	17 क्विं. /एकड़	30 क्विं/एकड़
आय में बढ़ोत्तरी	20,400 रूपया	36,000 रुपया
मजदूरी में बचाव	15 मजदूर	5 मजदूर
कटाई के लागत में कमी	2,250 रुपया	1500 रुपया का बचत

मैंने खेत से पानी निकला दिया पौधा हल्की-हल्की दूर-दूर दिखने लगा, प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के बताने के अनुसार मैंने पचास प्रतिशत अनुदानित दर पर कोनेवीडर खरीदा एवं रोपाई के एक सप्ताह बाद खेत में चलाया। इस का प्रतिफल बहुत अच्छा रहा, पौधा से कल्ले की संख्या एवं बढ़वार में बढ़ोतरी होने लगी। एक सप्ताह बाद पुनः कोनोवीडर चलाया रोपाई के लगभग एक माह बाद उप-परियोजना निदेशक, (आत्मा), हजारीबाग सहायक तकनीकी प्रबंधक एवं कृषक मित्र खेत पर आये और मेरी फसल को देखकर बहुत प्रसन्न हुए एवं मेरे पति और पुत्र में भी आस जगी और उन्हें अपनी गलती का अफसोस हुआ। विभाग द्वारा प्राप्त यूरिया को दो बार टाप ड्रासिंग की गई, इस प्रकार एक-एक पौधा से 55 से 60 कल्ले (बूदा, गुछा) निकले एवं मेरी फसल गाँव के पड़ोसियों में बड़ी अच्छी लगने लगी और प्रशंसा हुई, उप-परियोजना निदेशक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक बीच-बीच में आकर प्रोत्साहित करते रहे मेरा मनोबल बढ़ता गया। उनके बताने के अनुसार कदम से कदम मिलाकर चलते रहे, इस प्रकार 5×5 मी. की क्राप कटिंग करवाई जिसमें 76 क्विंटल प्रति हे० पैदावार प्राप्त करके बहुत खुश हुई और प्रखण्ड में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। कम पानी, कम बीज, कम लागत से अधिक पैदावार प्राप्त हुई इसके बाद मैंने निश्चय किया कि प्रतिवर्ष इसी तरह, धान की रोपाई करेंगे और अधिक से अधिक लाभ कमायेंगे एवं अपने गाँव, पंचायत, रिस्तेदारों एवं किसानों में भी यह कहानी बताती रहती हूँ और इसके साथ मुर्गी (कुक्कुट) फार्म 1500 चुजा का चलाती हूँ और इसके साथ 50 बकरी पालन करती हूँ और सब्जी की खेती- मूली, गाजर, बीट, पत्ता-गोभी, फूल-गोभी एवं टमाटर का खेती श्री विधि के अनुसार करती हूँ एवं वर्मी कम्पोस्ट खाद का बेड बनाकर खाद तैयार करती हूँ और तैयार खाद को अपने खेत में डालकर रसायनिक खाद की मात्रा का प्रयोग कम करती हूँ और किसानों को प्रेरित करती हूँ।

■■■

घरेलू महिला से बनी प्रगतिशील महिला कृषक - सुखमारी देवी

सुखमारी देवी
पतिः श्री वकील मसात
ग्राम- झखिया, पंचायत -ढेकचाधोंधा, प्रखंड - जरमुण्डी, दुमका

श्रीमति सुखमारी देवी एक जागरूक एवं प्रगतिशील महिला कृषक है। गाँव की आम महिलाओं की तरह अपना जीवन यापन कर रहीं थी। मुख्य रूप से एक घरेलू महिला होने के कारण खेती की तरफ कम ही ध्यान था। अपने पति श्री वकील प्रसाद के दैनिक कार्यों के साथ-साथ खेती में भी मदद किया करती थी। पारिवारिक जिम्मेदारी होने के बाद भी श्रीमती सुखमारी देवी के मन में खेती की ओर बहुत रूझान था।

इनके बगल के गाँव- खसिया, सुखजोरा में सब्जी की खेती काफी वृहद् पैमाने पर आज भी होती है। वहाँ केवल सब्जी की खेती ही की जाती है जिसके कारण कृषकों की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी है। वहाँ के कृषकों को देखकर श्रीमती सुखमारी देवी ने अपने पति की खेती-बारी में ज्यादा हाथ बँटाना शुरू किया। इनके पास कुल 3 एकड़ जमीन निजी है एवं एक एकड़ बँटाई वाली जमीन है।

कुल	:	3 एकड़ इसमें अतिरिक्त करीब 1 एकड़ बँटाई जमीन में भी खेती करती है। कृषि के अलावा - गाय 3, बैल 2, बकरी 6
आय	:	प्रतिदिन 25 लीटर दूध उत्पादन कर करीब 1 लाख रूपया वार्षिक आमदनी

इनके पास खेती योग्य भूमि तो थी परंतु तकनीक की कमी होने के कारण आमदनी अच्छी नहीं हो पा रही थी। कृषक मित्र के सहयोग से इन्होंने आत्मा, दुमका में संपर्क किया। आत्मा द्वारा इनकी अभिरूचि को देखते हुए प्रशिक्षण, परिभ्रमण, किसान गोष्ठी आदि कार्यक्रमों में शामिल किया गया। धीरे-धीरे कृषि कार्य में अभिरूचि के कारण श्रीमती सुखमारी देवी ने जल्द ही नई तकनीक की जानकारी हासिल कर ली। इस दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के संपर्क में भी रही। ज्ञान एवं मेहनत का फल आज इनके खेतों में दिखाई देता है। सब्जी खेती के साथ-साथ इन्होंने समेकित खेती को भी अपनाकर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत की है। आज इनके पास 3 जर्सी गाय, 12 बकरी, 2 बैल एवं 50 मुर्गियाँ भी हैं। एक छोटी सी शुरूआत ने इनके जीवन को बदल कर रख दिया। आज इनकी स्थिति काफी अच्छी है। आज इनकी पहचान एक घरेलू महिला की नहीं वरन् प्रगतिशील महिला कृषक की है। जो आज अपने दोनों बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हैं।

इनसे प्रेरित होकर गाँव की दूसरी महिलाएँ भी खेती की ओर अग्रसर है। श्रीमती सुखमारी देवी का कहना है कि आत्मा जैसा संस्थान जिला में एक नहीं वरन् कम से कम दो होने चाहिए ताकि महिलाएँ ज्यादा से ज्यादा नई तकनीकों का लाभ ले सके।

खेत में हरियाली आयी - जितनी देवी

श्रीमती जितनी देवी
पति-श्री रामेश्वर यादव,
ग्राम-सरदारोडीह,
पंचायत-उरवाँ

एक अच्छा किसान वही है जो मिट्टी की महत्ता को जानता या समझता हो जिस प्रकार एक मेहनतकश व्यक्ति रेगिस्तान में पानी के लिए कुआँ खोदकर तथा लोगों की प्यास बुझाता है। ऐसे ही एक महिला प्रगतिशील किसान है, श्रीमती जितनी देवी, पति- श्री रामेश्वर यादव, ग्राम-सरदारोडीह, पंचायत- उरवाँ का निवासी है।

श्रीमती जितनी देवी पढ़ी लिखी नहीं होने के बावजूद निराश नहीं हुई, निराशा में भी उसने आशा की किरण जगाई, उन्होंने अपनी मेहनत, लगन, धैर्य एवं आत्मविश्वास से पाँच एकड़ भूमि में सालों भर खेती कर के यह साबित किया कि महिलाएँ कभी भी पीछे नहीं है। जितनी देवी पहले वैज्ञानिक तरीके से खेती नहीं करती थी परन्तु आत्मा के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने प्रशिक्षण परिभ्रमण के द्वारा अपनी क्षमता का विकास किया, तथा वैज्ञानिक खेती की शुरूआत की, श्रीमती जितनी देवी आज समेकित कृषि प्रणाली अपनाकर अपनी आय दोगुनी कर चुकी है।

पाँच एकड़ में सालो भर टमाटर, फ्रेंचबीन, सेम, मटर, कोहड़ा, मूली, मिर्चा, आलू, फूलगोभी, बैगन, ओल, हल्दी, कद्दू, लहसून, प्याज, नेनुआ, भिण्डी, मक्का, मड़ुआ, बादाम, पालक, धनियाँ के सब्जी की खेती करके परिवार का सफलतापूर्वक भरण पोषण कर रही है। इसके अलावा आम, अमरूद, कटहल, अनार, लीची, नारियल, केला, शीशम, सागवान, गम्हार के वृक्ष लगायी हुई है। वे खेती के अलावा गो पालन, बकरी पालन भी कर रही है।

श्रीमति जितनी देवी के दो पुत्र तथा एक पुत्री है दोनों पुत्र पढ़ाई करने के बाद आज गाड़ी चला रहे हैं। श्रीमति जितनी देवी को आत्मा तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, जयनगर का भरपूर सहयोग मिला।

श्रीमति जितनी देवी का एक सपना है कि हर खेत में हरियाली आए और हर किसान खुशहाल हों।

वर्मी कम्पोस्ट में एक ही नाम - अनिता देवी

अनिता देवी
ग्राम-बासु, थाना- पाटन,
पलामू, झारखण्ड

मेरा नाम अनिता देवी है, पति बाबुलाल मेहता, ग्राम बासु थाना-पाटन, प्रखण्ड-पाटन, जिला-पलामू की निवासी हूँ। आठवीं तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद मेरे माता पिता ने मेरी शादी कर दी। शादी के बाद मैं अपने घर गृहस्थी में रम गई। मेरे पति अपने पुश्तैनी कार्य खेती-बारी करते हैं जिससे हमारे परिवार का भरण पोषण होता है। मेरे तीन बच्चे हैं। मेरे पति के पुराने तरीकों से खेती करने के कारण पूरी मेहनत के बाद भी हमें अच्छा खाना, कपड़ा नसीब नहीं होता था। फिर मैंने खाली समय में कुछ करने के लिए सोची। बात ही बात में मैंने ग्राम की कुछ महिलाओं के साथ मिलकर एक स्वयं सहायता समूह का निर्माण किया जिसका नाम मैंने लक्ष्मी महिला स्वयं सहायता समूह रखा। 3 वर्ष पूर्व एक दिन मैं डालटनगंज बाजार गयी हुई थी, लौटते समय मैंने आत्मा, पलामू के द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम को देखा। इसी क्रम में मुझे वर्मी कम्पोस्ट के बारे में जानकारी मिली। मैंने इसे करने का मन बना लिया। फिर आत्मा के कार्यालय में आकर विशेष जानकारी प्राप्त की और शुरूआत में एक छोटे गड्ढे में वर्मी कम्पोस्ट इकाई शुरू किया। समय-समय पर आत्मा के विषय वस्तु विशेषज्ञ के द्वारा तकनीकी जानकारी एवं मार्गदर्शन मिलता रहा। आत्मा पलामू से मुझे 10000 (दस हजार) रू० का रिवाल्विंग फण्ड भी उपलब्ध कराया गया है। आज मैं प्रति वर्ष 20000 (बीस हजार) रू० का वर्मी कम्पोस्ट बेच दिया करती हूँ तथा वर्मी कम्पोस्ट लगाने वाले इच्छुक लोगों को मैं केचुआ भी उपलब्ध कराती हूँ जिससे मुझे अलग आमदनी हो जाती है।

मैं अपने खेतों में भी अपने वर्मी कम्पोस्ट का ही इस्तेमाल करती हूँ जिससे मिट्टी सुधार होने के साथ ही उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई, मुझे कम खर्च में अच्छा मुनाफा हो जाता है। अब मैं आत्मा, के.भी.के, जिला कृषि कार्यालय के द्वारा लगाये गये प्रशिक्षण शिविर में जाती हूँ और प्रशिक्षण प्राप्त कर नये तकनीक से खेती करती हूँ। वर्तमान में मेरी कुल वार्षिक आय 70 से 80 हजार रू. हो गयी है। अब मेरा परिवार खुशहाल है मेरे बच्चे शहर में पढ़ते हैं मेरे पति के पास अपनी मोटर साईकल है तथा घर में रंगीन टी.वी. भी है।

■■■

छोटी सी पहल - कृष्णा सिंह

कृष्णा सिंह
पिता- स्व. मुनेश्वर सिंह
पलामू, झारखण्ड

मेरा नाम कृष्णा सिंह है, मेरे पिता का नाम स्व. मुनेश्वर सिंह है। मैं ग्राम पाटन एवं थाना-पाटन, जिला-पलामू का निवासी हूँ। मेरे परिवार में आय का मुख्य स्रोत खेती है। पहले मेरे पिताजी पुराने तरीके से खेती का कार्य करते थे जिसके कारण घर में हमेशा ही आर्थिक तंगी लगी रहती थी।

एक दिन मैं घर में बैठकर टी.वी. देख रहा था टी.वी. पर कृषि दर्शन नाम का कार्यक्रम आ रहा था। जिसमें कोई वैज्ञानिक किसानों को वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने के बारे में जानकारी दे रहे थे उस कार्यक्रम के दौरान मुझे मालूम हुआ कि कृषि विभाग के द्वारा किसानों के विकास के लिए कई योजना चलायी जा रही है। मैं दूसरे दिन ही डालटनगंज गया और 'आत्मा' कार्यालय में जाकर परियोजना निदेशक, आत्मा से बात-चीत किया उन्होंने मुझे बताया कि अभी किसानों को बैंक के द्वारा के.सी.सी. लोन दिया जा रहा है। कुछ दिनों तक सोच विचार के उपरान्त मैंने लोन के लिए आवेदन दिया और मुझे 25000 रू० का ऋण बैंक के द्वारा दिया गया।

'आत्मा' की देखरेख में प्रो एग्रो 6444 धान खरीदा और खेती किया जो एकड़ में 30 से 35 क्विंटल धान उपज हुआ। इससे उत्साहित होकर मैंने अगले वर्ष के.सी.सी. के द्वारा 50000 रू० का लोन लिया और धान, गेहूँ, तेलहन आदि का खेती किया जिसमें मुझे अच्छी आमदनी हुई। फिर आत्मा पलामू के द्वारा समेति राँची में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु जाने के बारे में पूछा गया तो मैंने तुरंत हाँ कर दिया। मैं रांची गया, समेती में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा हाईब्रीड धान प्रो एग्रो का 6 किलोग्राम का एक पैकेट मिला जिसे मैंने लाकर खेती किया तो काफी अच्छा धान का पैदावार हुआ।

वर्तमान में मेरी आमदनी काफी अच्छी हो गई है। मेरे बच्चे बाहर में अच्छे स्कूलों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं मेरा परिवार खुशहाल हो गया है। मैंने गाँव के और भी किसानों को 'आत्मा' के बारे में जानकारी दिया और हम सभी समय समय पर आत्मा, पलामू के द्वारा कोई ट्रेनिंग आदि का कार्यक्रम होता है तो हमलोग आकर उस प्रोग्राम में भाग लेते हैं तथा उससे आज पूरा गाँव लाभान्वित हो रहा है। मैं आत्मा को शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्होंने हम गरीबों की आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आनेवाले समय में किसान भाइयों को अधिक से अधिक 'आत्मा' से जोड़ने का प्रयास करुँगा, ताकि मेरी तरह सभी को लाभ मिल सके।

■■■

खेती से बदल ली अपनी जिन्दगी - रिंकू साव

रिंकू साव
पिता - गोपाल साव
धनबाद

निरसा बाजार में गुरूद्वारा के समीप मेरे पिताजी का एक छोटा सा होटल है, जिसमें मैं भी काम करता हूँ। परन्तु मेरा मन इस व्यवसाय में नहीं लगता था। मुझे खेती करने का मन कई वर्षों से था। पर कोई पैतृक खेत नहीं था। रोजी रोटी के लिए होटल में ही पिताजी का हाथ बँटाता था।

ग्राम धनबाद बस्ती, पंचायत खुशरी में मुझे एक बार 5 एकड़ खेत किराये पर लेने का अवसर प्राप्त हुआ, तो मैंने तुरन्त ले लिया। सिंचाई के लिए एक कुआँ भी था। मैंने इस खेत में विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ, जैसे भिंडी, बैंगन, टमाटर इत्यादि की खेती शुरू कर दिया। दो वर्ष बाद 5 एकड़ खेत और किराये पर मिल गया। 'आत्मा' के सहयोग से मुझे इस दौरान आयोजित प्रशिक्षण, परिभ्रमण कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। खेती की नई तकनीकों को जानकर मैंने इसे जमीन पर उतारना शुरु किया। खेती करते करते बहुत सारी तकनीकी जानकारी मुझे प्राप्त हुई। NETAFIM (झारखण्ड सरकार द्वारा 90 प्रतिशत अनुदान पर 8 एकड़ खेत में टपक सिंचाई (Dip Irrigation) बैठाई गई, जिससे पानी का समस्या से छुटकारा मिल गया और कुछ काम भी आसान हो गया।

मुझे 1 लाख और फिर 50 हजार का दो ऋण किसान क्रेडिट कार्ड प्राप्त हुआ, जिससे खेती में पूंजी की कमी दूर हुई। कुछ नया करने के इरादे से इस वर्ष मैंने तरबूज की भी खेती प्रारंभ की, जिसमें मुझे सफलता प्राप्त हुई। मैंने सोलर पम्प सेट भी लगवाया, पर इसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई। अब मेरा झुकाव जैविक खेती की ओर है। पिछले 6 महीनों से मैने अपने खेत में किसी भी प्रकार का कोई रसायन का प्रयोग नहीं किया है। अब मैंने पूरी तरह जैविक खेती की ओर बढ़ने का निश्चय कर लिया है। जैविक खेती की जानकारी मुझे अपने प्रखण्ड के BTM से प्राप्त हुई। जैविक खेती उत्पादन के लिए मैंने आवश्यक कार्य शुरु कर दिया है। मुझे उम्मीद है मैं 'आत्मा' के सहयोग से अत्यधिक जानकारी के साथ खेती से अधिक आमदनी प्राप्त कर सकूँगा।

■■■

कृषक पाठशाला में सीखी तकनीक - उत्तरा महतो

उत्तरा महतो
पति : घासीराम महतो
ग्राम-चेनपुर,
प्रखण्ड-चाण्डिल,
जिला-सरायकेला

मैं एक किसान की बेटी हूँ। पति घासीराम महतो, ग्राम-चैनपुर, प्रखण्ड-चाण्डिल, जिला-सरायकेला की निवासी हूँ। मैं पांच सदस्य वाले एक किसान परिवार से हूँ। मैं परम्परागत पद्धति से खेती करती थी। परिवार का भरण-पोषण करने में कठिनाई हो रही था। बच्चे की समुचित शिक्षा की व्यवस्था के अलावा परिवार का भरण-पोषण मेरे माथे पर थी। मेरे परिवार की खेती योग्य जमीन बहुत कम थी, लेकिन सिंचाई की समुचित व्यवस्था थी। मैं धान के अलावा सब्जी की खेती जैसे करेला, लौकी, खीरा इत्यादि की खेती भी करती थी, जिससे मेरी आय कुछ बढ़ी। इस काम को करने में मेरे पति ने भी भरपूर सहयोग किया। और मेरे आय का सुधार होते देख कर मेरे मन में वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की इच्छा हुई। इसी बीच आत्मा द्वारा मेरे गांव में कृषक पाठशाला प्रशिक्षण कार्यक्रम चल रहा था। सौभाग्यवश मैं भी कृषक पाठशाला प्रशिक्षण में उपस्थित थी। प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी, सहायक तकनीकी प्रबंधक तथा प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक द्वारा SRI विधि से धान की खेती के बारे में जानकारी दी जा रही थी। मैं ध्यान से पुरी बातें सुनी। मेरे दिमाग में एक बात घर कर गई कि इस साल मैं भी SRI विधि से खेती करूँगी, तथा मेरी उत्सुकता दोगुनी हो गयी। मैंने प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक से आग्रह किया कि मेरे खेत में एक प्रत्यक्षण करावें। इस प्रस्ताव को प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक ने हाँ भी भर दी। इस क्रम में मैंने श्री विधि से धान की खेती के बारे में आत्मा भवन सरायकेला द्वारा आयोजित विशेष प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि इस विधि को अपना कर अपने उत्पादन को दो गुना किया जा सकता है।

मैंने मन बना लिया था कि इस साल SRI विधि से ही खेती करूँगी। प्रखण्ड तकनिकी प्रबंधक के सहयोग से एक एकड़ जमीन में SRI विधि से खेती प्रारम्भ किया। एक एकड़ जमीन के लिए दो किलोग्राम बीज लेकर नमक पानी में डुबो कर तैरते हुए बीजों को अलग किया जाना है और स्वस्थ बीजों से नमक को हटाने के लिए साफ पानी से धाए, कार्बेडाजिम से बीजों को उपचारित किया। बीज बेड से 15 दिनों का बीचडा को मिट्टी सहित उखाड़कर एक एक बिचड़ा 10 गुना 10 इंच की दूरी पर एक-एक बिचड़ा लगाया गया। पहले तो मैं प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक से आश्वस्त नहीं थी लेकिन ईश्वर तथा वैज्ञानिक पर भरोसा रखा। 16 दिनों के पश्चात जब टीलर्स आने लगे और खाली जगह भरने लगे तो जान में जान आई। तकनीकी सलाह के अनुसार 21 दिनों के पश्चात कोनोवीडर चलाई तो कुछ दिन पश्चात ही टीलर्स की संख्या तेजी से बढ़ने लगी। और 30 दिनों के पश्चात दोबारा कोनोवीडर चलाई तो और अन्य खेतों की तुलना में पौधा स्वस्थ पाया। इस प्रत्यक्षण प्लॉट को गाँव के अन्य लोग भी देख कर मेहनत का फल बताया। प्रखण्ड के पदाधिकारी धान के कलवे की संख्या को गिने और कुल 45-50 टीलर्स पाया, और सुझाव दिये कि खेत में नमी बनी रहे। धान 120 दिनों तक हो चुकी थी। अब फसल तैयार हो चुकी थी। पूरे प्रत्यक्षण का कार्यक्रम प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक के देख रेख पर की गई थी। अब फसल कटनी की बारी थी।

नियत दिन पर जिला कृषि पदाधिकारी एवं प्रखण्ड के BAO, BTM, ATM के समक्ष फसल कटनी की गई। जिसमें 76 क्विं. प्रति हे. उत्पादन हुआ, जो पूर्व से दोगुना था। आज मैं खुश हूँ, और मेरे परिवार की अच्छी तरह से भरण-पोषण कर पा रही हूँ।

आज मैं समझ गई हूँ, मेहनत के साथ-साथ नई तकनीक कितनी जरूरी है। मेहनत एवं नई तकनीक के मिश्रण से ही किसानों की आय दोगुनी की जा सकती है।

■■■

नई तकनीक की कहानी - छाया महतो

छाया महतो
पति - उमा महतो
ग्राम-सिमला,
प्रखण्ड-खरसावाँ
जिला-सरायकेला

हमारा परिवार वर्षों से पारंपरिक विधि से धान की खेती करते आ रहा है। उत्पादन इतना कम हो रहा था कि किसी तरह हमारे परिवार का पालन पोषण हो रहा था। धीरे-धीरे परिवार भी बढ़ रहा था। मेरे परिवार में सास-ससुर के अलावा मेरे दो बेटे भी हैं, जिनकी समुचित शिक्षा व्यवस्था करने का दायित्व भी मेरे माथे पर था। मैंने भी स्वयं खेती कार्य करने का निर्णय लिया तथा धाान, गेहूँ के अलावा सब्जी, धनियाँ मंगरैला, आलू प्याज इत्यादि की खेती भी करना प्रारंभ किया। मेरे इस कार्य में पति एवं परिवार का भरपूर सहयोग मिला और मैं उक्त फसलों की खेती कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में जुट गयी। जमीन के जोत छोटे होने के कारण जो धान, गेहूँ का उत्पादन हो रहा था, वह काफी नहीं था। मैंने उर्वरक आदि का भी प्रयोग किया, परन्तु उपज में बहुत ज्यादा अन्तर नजर नहीं आ रहा था। इस बीच आत्मा द्वारा मेरी पंचायत में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था, इसमें प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक, खरसावाँ के द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा था। प्रशिक्षण के क्रम में भी श्रीविधि से धान की खेती के संबंध में जानकारी दी जा रही थी।

प्रशिक्षण के समाप्ति के बाद मैं उनसे मिली तो उन्होंने मेरी उत्सुकता देखकर मुझे एक प्रत्यक्षण उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। इसी क्रम में, मैं एक दिन परियोजना निदेशक, आत्मा, सरायकेला के पास पहुँची जहाँ मुझे बताया गया कि वैज्ञानिक तकनीक से खेती करके ही कम लागत में अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है तथा अधिक शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है। मैंने श्री विधि से धान की खेती पर आत्मा सरायकेला द्वारा आयोजित विशेष प्रशिक्षण भी लिया, जिसमें यह बतलाया गया कि इस विधि को अपना कर अपने उत्पादन को दुगना किया जा सकता है। यह जानकारी मेले लिए रामबाण की तरह था।

जिला कृषि पदाधिकारी, सरायकेला के द्वारा कहा गया कि आप इस विधि से एक बार धान की खेती करें आत्मा द्व ारा आपको सम्पूर्ण तकनीकी सहायता प्रदान की जाएगी। मैं इस विधि को पूर्णतः समझ गयी थी तथा उक्त प्रत्यक्षण अपने खेत पर करने का मन बना चुकी थी। प्रारंभ में जब मैंने खेत को तैयार कर जिला कृषि पदाधिकारी तथा तकनीकी सहायक से 12 दिनों का बिचड़ा को मिट्टी सहित थाली में लेकर एक-एक बिचड़ा का 10-10 ईंच की दूरी पर लगाया तो सारे ग्राम वासी मेरे उपहास करने लगे। कहने लगे बेकार मेहनत कर रही हो। इससे कितना उत्पादन प्राप्त कर सकोगी?

परन्तु कुछ दिनों के पश्चात जब धान के पौधों में कल्ले आने लगे एवं तकनीकी सलाह के अनुसार 21 दिनों के पश्चात जब खेतों में कोनीवीडर चलाया गया तो उसके कुछ दिनों के पश्चात ही टीलर्स की संख्या इतनी बढ़ गयी कि मेरा खेत भरा-भरा सा दिखने लगा और अन्य खेतों की तुलना में पौधे भी स्वस्थ दिख रहे थे। तब जाकर ग्राम वासियों ने कहा कि वाह! अब आपकी मेहनत रंग ला रही है। फसल बहुत ही अच्छी है और उपज भी बहुत अच्छा होगा। हमलोग भी अगले वर्ष इस विधि को अपनाऐंगे। मैं अपने खेत को देखकर फूली नहीं समा रही थी। इसी बीच एक दिन अचानक जिला कृषि पदाधिकारी अपनी पूरी तकनीकी टीम के साथ मेरे प्रत्यक्षण स्थल पर पहुँचे। टीम के सदस्यों ने टीलर्स की संख्या को गिना और पौधे में कुल 42 से 48 टीलर्स पाया गया। बताया गया कि फसल अच्छा है, देख-रेख की जरूरत है और पानी को हमेशा 1 से.मी. से ज्यादा न होने दें।

फसल इतनी अच्छी थी कि आस-पास के पंचायत एवं किसान मेरे धान के खेत को देखने के लिए आने लगे। अब फसल तैयार हो चुकी थी। मेरे द्वारा दी गयी जानकारी के आलोक में जिला पदाधिकारी, सरायकेला ने फसल कटनी के दिन किसान गोष्ठी का आयोजन करने की सलाह दी तथा खुद उपस्थित होने की बात कही। मैं आज भी उस गोष्ठी को याद करती हूँ जब जिला कृषि पदाधिकारी अपने पूरी टीम के साथ मेरे प्रत्यक्षण प्लॉट पर पहूँचे तथा सभी ग्रामवासी तथा आसपास के पंचायत के किसान फसल कटनी-सह-किसान गोष्ठी में उपस्थित हुए। फसल कटनी प्रारंभ हुई फसल काटकर दौनी कर फसल का वजन लिया गया तथा उत्पादन का आंकलन किया गया। सभी ग्रामवासी तथा आसपास के किसान उत्पादकता को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उत्पादन 62 क्विं. प्रति हेक्टर. आया, जबकि मेरे पति के द्वारा सामान्य विधि से उसी प्रभेद के बचे बिचड़े से लगाये खेत में मात्र 22 क्विं. प्रति हेक्ट. उत्पादन प्राप्त हुआ। कुल-40 क्विं. प्रति हेक्ट. लाभ प्राप्त हुआ।

इससे एक बात तो स्पष्ट एवं प्रमाणित हो गयी कि वर्तमान समय में मेहनत और सही तकनीक के बल पर अच्छी उपज एवं मुनाफा कमाया जा सकता है।

■■■

एस०एम०ए०ई० / आत्मा योजना के मुख्य घटक / गतिविधियाँ
प्रत्यक्षण - किसानों द्वारा किसानों के प्रक्षेत्र में कृषि संबंध प्रत्यक्षण का आयोजन
प्रशिक्षण - अन्तर्राज्यीय, राज्य अन्दर एवं जिलान्तर्गत
समूह निर्माण - जिला में कृषक अभिरुचि समूह, बीज राशि एवं खाद्य समूह का गठन
परिभ्रमण - अन्तर्राज्यीय, राज्य के अन्दर एवं जिलान्तर्गत
पुरस्कार - श्रेष्ठ संगठित समूह एवं प्रखण्ड स्तरीय किसानों हेतु
मेला - कृषकों के ज्ञानवर्द्धन एवं क्षमता विकास हेतु प्रत्येक जिला स्तर पर किसान मेला-सह-प्रदर्शनी का अयोजन (कुल 24)
सूचना प्रसार - लिफलेट, फोल्डर का मुद्रण एवं लोकल विज्ञापन तथा कम लागत का प्रकाशन
डिजिटल रूप में प्रौद्योगिकी पैकेज का विकास आईटी नेटवर्क हेतु
अनुसंधान, प्रसार अभिसरन - किसान वैज्ञानिक अन्तर मिलन एवं वैज्ञानिक एवं प्रसार कार्यकर्त्ता का संयुक्त भ्रमण
किसान गोष्ठी / प्रक्षेत्र दिवस आदि का आयोजन
कृषक पाठशाला का संचालन

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन (आत्मा) पलामू
मशरूम अनुसंधान निदेशालय
सोलन, हिमाचल प्रदेश
दिनांक 03.10.2018 से 09.10.2018

पाठशाला

"कृषक कल्याण अभियान"
फेज - 2

किसान कॉल सेन्टर

मुफ्त फोन सेवा डायल करें

1551

समय - प्रातः 6.00 बजे से 10.00 बजे तक

1800 180 1551

किसान सहायता कोषांग : 7632996429

मुख्य संपादक एवं प्रकाशक	:	**डॉ. एम.एस.ए. महालिंगा शिवा,** निदेशक समेति, झारखण्ड।
लेखन एवं सह संपादक	:	**श्री अभिषेक तिर्की,** संकाय, कृषि प्रसार प्रबंधन, समेति, झारखण्ड
सहयोग एवं संकलन	:	**श्री राकेश कुमार,** ए.टी.एम., सरायकेला, प्रतिनियुक्त, समेति, झारखण्ड। **श्री पंकज कुमार चटर्जी,** फेसिलिटेटर 'देसी', समेति, झारखण्ड।
टंकण एवं साज-सज्जा	:	**श्री परशु राम,** कम्प्यूटर ऑपरेटर, समेति, झारखण्ड।
आभार	:	आत्मा - धनबाद, पलामू, रामगढ़, हजारीबाग, चतरा, लातेहार, पश्चिम सिंहभूम, राँची, दुमका, सरायकेला

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन प्रसार-सह-प्रशिक्षण संस्थान (समेति), झारखण्ड

द्वितीय तल्ला, कृषि भवन, काँके रोड, राँची, झारखण्ड

Web. : www.sameti.org, E-mail : sametijharkhand@rediffmail.com

© सर्वाधिकार सुरक्षित

401_0818_ Annapurna Press & Process 0651-2331800, appranchi.1969@gmail.com